



एग्री आर्टिकल्स

(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)

वर्ष: 06, अंक: 05 (सितम्बर-अक्टूबर, 2026)

www.agriarticles.com पर ऑनलाइन उपलब्ध

© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

महिला किसानों के सशक्तिकरण में कृषि प्रसार शिक्षा की भूमिका

*डॉ. पतिराम¹ एवं डॉ. जगतपाल²

¹सहायक अध्यापक (कृषि प्रसार), भवदीय एजुकेशनल इन्स्टीट्यूट, सीवार, सोहावल, अयोध्या (उ. प्र.)

²सहायक प्राध्यापक, कृषि विभाग, क्रांति विश्वविद्यालय, रुड़की, उत्तराखंड

*संवादी लेखक का ईमेल पता: patirammaurva29@gmail.com

कृषि में महिलाओं की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। वे फसल उत्पादन, पशुपालन, बीज संरक्षण, प्रसंस्करण तथा विपणन जैसी अनेक गतिविधियों में सक्रिय योगदान देती हैं। भारत में ग्रामीण महिला श्रमिकों के रोजगार में कृषि, वानिकी और मत्स्य क्षेत्र की हिस्सेदारी 2023-24 में लगभग 76.9% रही, जो कृषि पर महिलाओं की आजीविका-निर्भरता को दर्शाती है। दूसरी ओर, 2015-16 में महिलाओं द्वारा संचालित परिचालन जोतों की हिस्सेदारी 13.78% थी। इससे कृषि में महिलाओं की सक्रिय भागीदारी और औपचारिक कृषि नियंत्रण के बीच अंतर स्पष्ट होता है। कृषि प्रसार शिक्षा किसानों तक नई तकनीकों, उन्नत उत्पादन विधियों, कृषि संसाधनों और बाजार संबंधी जानकारी पहुंचाने का महत्वपूर्ण माध्यम है। महिलाओं के लिए इसकी भूमिका और भी व्यापक है, क्योंकि यह उनके ज्ञान, तकनीकी दक्षता, निर्णय लेने की क्षमता तथा संस्थागत भागीदारी को मजबूत कर सकती है। हालांकि, प्रशिक्षण का समय, स्थान, संसाधनों तक पहुंच, घरेलू कार्यभार और सामाजिक परिस्थितियाँ महिलाओं की प्रसार सेवाओं तक पहुंच को प्रभावित करती हैं। अतः महिला किसानों को केवल कृषि श्रमिक नहीं, बल्कि सक्रिय किसान, निर्णयकर्ता और कृषि विकास की भागीदार के रूप में देखते हुए महिला-केंद्रित कृषि प्रसार शिक्षा को बढ़ावा देना आवश्यक है।

महिला सशक्तिकरण का अर्थ

महिला सशक्तिकरण को केवल आय वृद्धि के रूप में देखना पर्याप्त नहीं है। सशक्तिकरण एक बहुआयामी प्रक्रिया है जिसमें व्यक्ति की स्वयं निर्णय लेने की क्षमता, संसाधनों तक पहुंच, संसाधनों के उपयोग पर नियंत्रण, सामाजिक भागीदारी, नेतृत्व और अपने जीवन से संबंधित विकल्पों को प्रभावित करने की क्षमता शामिल होती है। कृषि क्षेत्र में इसका अर्थ है कि महिला यह तय करने में भाग ले सके कि कौन-सी फसल लगाई जाए, कौन-सा बीज खरीदा जाए, उर्वरक और पौध संरक्षण का उपयोग कैसे किया जाए, कृषि आय का कितना हिस्सा निवेश किया जाए तथा उत्पाद कहाँ और किस कीमत पर बेचा जाए। कृषि क्षेत्र में महिला सशक्तिकरण के मापन के लिए विकसित WEAI और इसके विभिन्न रूपों में उत्पादन संबंधी निर्णय, संसाधनों पर नियंत्रण, आय का उपयोग, नेतृत्व और समय जैसे आयामों को महत्व दिया गया है। कृषि प्रसार शिक्षा इस संदर्भ में एक महत्वपूर्ण प्रवेश-बिंदु है, क्योंकि जानकारी agency का आधार बन सकती है। लेकिन जानकारी तभी प्रभावी होगी जब महिला के पास उसका उपयोग करने के लिए पर्याप्त संसाधन और निर्णय लेने की वास्तविक गुंजाइश भी हो।

कृषि प्रसार शिक्षा: सूचना से सशक्तिकरण तक

पारंपरिक प्रसार व्यवस्था का मुख्य लक्ष्य अक्सर “नई तकनीक किसानों तक पहुँचाना” रहा है। महिला-केंद्रित दृष्टिकोण में यह लक्ष्य अधिक व्यापक होना चाहिए। यहाँ कृषि प्रसार शिक्षा को ज्ञान निर्माण, कौशल विकास, समस्या समाधान, आत्मविश्वास और संस्थागत नेटवर्क के निर्माण की प्रक्रिया के रूप में देखना आवश्यक है। घाना में कृषि तकनीक अपनाने पर किए गए शोध में पाया गया कि पुरुषों और महिलाओं के बीच तकनीकी अपनाने के अंतर को केवल उनकी व्यक्तिगत पसंद से नहीं समझाया जा सकता; भूमि, श्रम और कृषि प्रसार जैसी पूरक सेवाओं तक अलग-अलग पहुँच भी महत्वपूर्ण होती है। इससे स्पष्ट होता है कि किसी तकनीक का उपलब्ध होना और उसका महिलाओं द्वारा प्रभावी रूप से अपनाया जाना दो अलग-अलग बातें हैं। महिला किसानों के संदर्भ में प्रसार शिक्षा को उनकी दैनिक परिस्थितियों से जोड़ना आवश्यक है। उदाहरण के लिए, यदि किसी महिला को उन्नत सब्जी किस्म के बारे में जानकारी दी जाती है लेकिन सिंचाई, गुणवत्तापूर्ण बीज या बाजार तक उसकी पहुँच नहीं है, तो प्रशिक्षण का प्रभाव सीमित रहेगा।

तकनीकी ज्ञान और कौशल विकास

महिला किसानों के सशक्तिकरण में कृषि प्रसार शिक्षा की पहली प्रत्यक्ष भूमिका तकनीकी दक्षता का विकास है। आधुनिक कृषि में खेती से जुड़े निर्णय पहले की तुलना में अधिक ज्ञान-आधारित हो गए हैं। गुणवत्तापूर्ण बीज, पोषक तत्व प्रबंधन, सूक्ष्म सिंचाई, जैविक विकल्प, एकीकृत कीट प्रबंधन, मौसम आधारित सलाह और सुरक्षित कीटनाशक उपयोग जैसी तकनीकों के सफल प्रयोग के लिए प्रशिक्षित किसान आवश्यक है। भारत में जलवायु-सहिष्णु बीजों और गुणवत्तापूर्ण बीज उत्पादन पर किए गए एक प्रायोगिक अध्ययन में प्रशिक्षण के बाद कुछ अनुशंसित बीज-प्रबंधन प्रथाओं को अपनाने में वृद्धि देखी गई और महिलाओं की प्रतिक्रिया को भी महत्वपूर्ण माना गया। महिला किसानों के लिए विषय-विशिष्ट प्रशिक्षण अधिक उपयोगी हो सकता है, जैसे सब्जी उत्पादन, बीज उत्पादन, बागवानी, नर्सरी प्रबंधन, पशुपालन, मधुमक्खी पालन, मशरूम उत्पादन, प्रसंस्करण एवं मूल्य संवर्धन। इस प्रकार प्रशिक्षण महिलाओं को केवल पारंपरिक कृषि श्रम से आगे बढ़ाकर उच्च-मूल्य कृषि गतिविधियों से जोड़ सकता है।

कृषि संबंधी निर्णय लेने में महिलाओं की भागीदारी

ज्ञान का वास्तविक प्रभाव तब सामने आता है जब वह निर्णय क्षमता में परिवर्तित होता है। कृषि परिवार में यदि महिला खेती के महत्वपूर्ण निर्णयों में अपनी राय नहीं रख पाती, तो केवल प्रशिक्षण लेने से उसका सशक्तिकरण सीमित रह सकता है। भारत में 977 महिलाओं और 80 गाँवों के अध्ययन में 414 महिलाएँ, अर्थात् लगभग 42%, स्वयं सहायता समूह की सदस्य थीं। शोध में पाया गया कि स्वयं सहायता समूह की सदस्यता से 10 में से 8 प्रकार की कृषि सूचनाओं तक पहुँच में सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण सुधार जुड़ा था। सूचना के विभिन्न क्षेत्रों में प्रभाव लगभग 3 से 12 प्रतिशत अंक तक पाया गया; बेहतर बीज, SRI तथा फसल चयन/फसल चक्र जैसी सूचनाओं में वृद्धि विशेष रूप से उल्लेखनीय थी। हालाँकि उसी अध्ययन का एक महत्वपूर्ण संदेश यह भी था कि जानकारी में वृद्धि अपने आप बेहतर कृषि पद्धतियों, फसल विविधीकरण या उत्पादन परिणामों में बड़े परिवर्तन में नहीं बदली। शोधकर्ताओं ने वित्तीय बाधाओं, सामाजिक मानदंडों और महिलाओं की घरेलू जिम्मेदारियों को संभावित कारणों में शामिल किया।

स्वयं सहायता समूह और सामूहिक सीख

महिलाओं के स्वयं सहायता समूह कृषि प्रसार के लिए मजबूत सामाजिक मंच बन सकते हैं। सामूहिक बैठकें महिलाओं को अपने अनुभव साझा करने, समस्याओं पर चर्चा करने और नई जानकारी की विश्वसनीयता समझने का अवसर देती हैं। भारत में किए गए प्रभाव-अध्ययन से पता चला कि महिला स्वयं सहायता समूहों से जुड़ाव ने कृषि सूचना, कुछ कृषि निर्णयों और वित्तीय सेवाओं तक पहुँच को बेहतर बनाने में योगदान दिया, जबकि उत्पादन व्यवहार पर प्रभाव सीमित रहा। इस परिणाम से यह संकेत मिलता है कि समूहों को केवल सूचना देने के केंद्र के रूप में नहीं,

बल्कि निर्णय, संसाधन और बाजार से जोड़ने वाले मंच के रूप में विकसित किया जाना चाहिए। महिला समूहों पर किए गए एक अन्य अध्ययन में समूह की सामूहिक शक्ति और महिला agency के बीच सकारात्मक संबंध दर्ज किया गया। सामूहिक संगठन महिलाओं को व्यक्तिगत स्तर की सीमाओं से बाहर निकलकर साझा समस्याओं पर कार्य करने का अवसर प्रदान कर सकता है।

महिला प्रसार कार्यकर्ताओं की भूमिका

प्रसार तंत्र में महिलाओं की संख्या और भूमिका बढ़ाना महिला किसानों तक पहुँच सुधारने का एक संभावित माध्यम है। कुछ सामाजिक परिस्थितियों में महिला किसानों के लिए महिला प्रशिक्षक या महिला कृषि अधिकारी से बातचीत करना अधिक सहज हो सकता है। अफ्रीका और एशिया में किए गए शोधों ने संकेत दिया है कि कृषि प्रसार सेवाओं में महिलाओं की भागीदारी और सलाह की संरचना स्वयं सेवा के प्रभाव को प्रभावित कर सकती है। भारत में किए गए एक अध्ययन में प्रसार कर्मियों ने महिला किसानों की अधिक भागीदारी और महिला प्रसार कर्मचारियों की भूमिका को महत्वपूर्ण माना।

सहभागी प्रसार और किसान क्षेत्र विद्यालय

किसान क्षेत्र विद्यालय जैसी पद्धतियाँ महिला किसानों के लिए विशेष रूप से उपयोगी हो सकती हैं क्योंकि इनमें किसान खेत पर देखकर, प्रयोग करके और चर्चा के माध्यम से सीखता है। ऐसी व्यवस्था में प्रशिक्षक केवल व्याख्याता न रहकर सुविधाप्रदाता की भूमिका निभाता है। पूर्वी अफ्रीका में किसान क्षेत्र विद्यालयों के प्रभाव का अध्ययन बताता है कि सहभागी प्रशिक्षण से ज्ञान, उत्पादन और आय से जुड़े परिणामों में सुधार हो सकता है तथा यह छोटे किसानों तक कृषि संदेश पहुँचाने का प्रभावी माध्यम बन सकता है। महिला किसानों के लिए इस पद्धति का लाभ यह है कि इसमें केवल पढ़े-लिखे होने की आवश्यकता कम होती है। यदि पौधों की पहचान, रोग की पहचान, जैविक उपचार, कीट निगरानी या सिंचाई प्रबंधन जैसी तकनीक खेत पर दिखाकर समझाई जाए, तो जानकारी को व्यवहार में बदलना अपेक्षाकृत आसान हो सकता है।

डिजिटल कृषि प्रसार

डिजिटल तकनीक कृषि प्रसार के स्वरूप को तेजी से बदल रही है। मोबाइल फोन, व्हाट्सएप समूह, कृषि ऐप, मौसम संदेश, वीडियो सलाह, वॉइस संदेश और डिजिटल बाजार मंच किसानों तक अपेक्षाकृत कम लागत में सूचना पहुँचा सकते हैं। भारत में मोबाइल आधारित कृषि सलाह के अध्ययन ने यह संकेत दिया कि मोबाइल सेवाएँ किसानों तक समय पर उपयोगी जानकारी पहुँचाने में मदद कर सकती हैं, लेकिन महिलाओं और छोटे किसानों की पहुँच तथा सहभागिता समान नहीं होती। हालाँकि डिजिटल प्रसार को अपने आप समावेशी मानना उचित नहीं है। डिजिटल साक्षरता, मोबाइल का स्वामित्व, फोन के उपयोग पर नियंत्रण, इंटरनेट खर्च और स्थानीय भाषा में सामग्री की उपलब्धता जैसी परिस्थितियाँ महिलाओं के वास्तविक लाभ को प्रभावित करती हैं।

सूचना की गुणवत्ता और स्थानीय प्रासंगिकता

महिला किसानों तक सूचना पहुँचाना महत्वपूर्ण है, लेकिन सूचना की गुणवत्ता और स्थानीय प्रासंगिकता भी उतनी ही आवश्यक है। घाना और श्रीलंका में किए गए अध्ययन में पाया गया कि कृषि सलाह की गुणवत्ता और उसकी उपयोगिता को किसान के लिंग के साथ-साथ स्थानीय परिस्थितियाँ भी प्रभावित करती हैं। एक महिला किसान के लिए “सही तकनीक” वही नहीं होगी जो प्रयोगशाला या शोध स्टेशन में केवल तकनीकी रूप से बेहतर हो। उसे ऐसी तकनीक चाहिए जिसे उपलब्ध पानी, श्रम, भूमि, पूंजी और बाजार की परिस्थितियों में लागू किया जा सके। इसलिए प्रसार शिक्षा में स्थानीय समस्याओं की पहचान, सहभागी योजना और किसान की प्रतिक्रिया को शामिल करना आवश्यक है।

जलवायु परिवर्तन और महिला किसानों के लिए प्रसार शिक्षा

जलवायु परिवर्तन कृषि जोखिम को बढ़ा रहा है और इसका प्रभाव महिलाओं की कृषि भूमिका पर भी पड़ता है। अनिश्चित वर्षा, तापमान परिवर्तन, सूखा, बाढ़ तथा नए कीट-रोग जोखिम किसानों को नई अनुकूलन रणनीतियाँ अपनाने के लिए बाध्य करते हैं। भारत के संदर्भ में शोध ने दिखाया है कि महिला किसानों की भूमि, ऋण, सूचना, औपचारिक प्रसार तथा समय तक सीमित पहुँच जलवायु-स्मार्ट कृषि तकनीकों को अपनाने में बाधा बनती है। गुजरात में किए गए अध्ययन के अनुसार महिलाओं की कम भूमि स्वामित्व, ऋण तक सीमित पहुँच, कम औपचारिक प्रसार संपर्क और समय का दबाव जलवायु-स्मार्ट कृषि के लाभों तक उनकी पहुँच को बाधित कर सकते हैं। भारत की कृषि पर जलवायु जोखिमों का प्रभाव देखते हुए यह महत्वपूर्ण है कि जलवायु-स्मार्ट कृषि कार्यक्रमों में महिला किसानों को सीधे सूचना और प्रशिक्षण दिया जाए। मौसम आधारित सलाह, सूखा-सहिष्णु किस्में, जल संरक्षण, फसल विविधीकरण, कम लागत वाली अनुकूलन तकनीक और वैकल्पिक आय गतिविधियाँ महिला किसानों की प्रतिकूल परिस्थितियों से निपटने और पुनः उबरने की क्षमता बढ़ाने में मदद कर सकती हैं।

प्रसार शिक्षा और कृषि उत्पादकता

महिला सशक्तिकरण और कृषि उत्पादकता के बीच संबंध केवल सैद्धांतिक नहीं है। पश्चिमी केन्या के 707 मक्का उत्पादक कृषक परिवार पर किए गए अध्ययन में महिलाओं के कृषि सशक्तिकरण और मक्का की उत्पादकता के बीच सकारात्मक संबंध पाया गया। अध्ययन में विशेष रूप से यह संकेत मिला कि महिला सशक्तिकरण का प्रभाव उन खेतों पर भी दिखाई दिया जिन्हें महिलाएँ स्वयं प्रबंधित करती थीं। यह परिणाम इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि इससे पता चलता है कि महिला सशक्तिकरण को सामाजिक लक्ष्य के साथ-साथ कृषि उत्पादकता की रणनीति के रूप में भी देखा जा सकता है। इथियोपिया के 1,485 कृषि परिवार वाले अध्ययन में भी महिला किसानों के लिए अधिक उत्तरदायी प्रसार व्यवस्था से प्रसार पहुँच में शुरुआती सुधार तथा उच्च-मूल्य फसल खेती और खेती के क्षेत्र में वृद्धि दर्ज की गई।

बाजार और उद्यमिता का समावेश

महिला सशक्तिकरण की दिशा में कृषि प्रसार को उत्पादन तक सीमित रखना पर्याप्त नहीं है। यदि महिला किसान उत्पादन बढ़ाती है लेकिन उत्पाद की बिक्री, मूल्य निर्धारण या आय पर उसका नियंत्रण नहीं है, तो आर्थिक सशक्तिकरण अधूरा रह सकता है। भारत के शोध में बाजार-उन्मुख कृषि और महिला सशक्तिकरण के बीच संबंध पाया गया है। इससे यह संकेत मिलता है कि महिलाओं को उत्पादन से बाजार तक पूरी value chain में जोड़ना उनके आर्थिक अवसरों को बढ़ा सकता है।

प्रसार सेवाओं में महिलाओं की पहुँच की प्रमुख बाधाएँ

महिला किसानों के लिए प्रभावी कृषि प्रसार व्यवस्था विकसित करने में कई स्तरों की बाधाएँ हैं। पहली बाधा उनकी किसान के रूप में सीमित संस्थागत पहचान है। दूसरी बाधा भूमि स्वामित्व और संसाधनों पर नियंत्रण का अभाव है। तीसरी बाधा घरेलू और देखभाल संबंधी कार्यों के कारण समय की कमी है। चौथी बाधा प्रशिक्षण केंद्रों तक पहुँच तथा सामाजिक गतिशीलता की सीमाएँ हैं। डिजिटल माध्यमों के संदर्भ में भी मोबाइल और इंटरनेट तक समान पहुँच का प्रश्न मौजूद है। इसके अतिरिक्त ऋण, गुणवत्तापूर्ण इनपुट, सिंचाई तथा बाजार तक पहुँच सीमित होने पर तकनीकी सलाह का प्रभाव व्यवहार में कम हो सकता है। भारत में जलवायु-स्मार्ट कृषि पर शोध में भूमि, ऋण, सूचना, औपचारिक प्रसार और समय की सीमित उपलब्धता को महिलाओं के लिए प्रमुख बाधाओं के रूप में रेखांकित किया गया है।

महिला-केंद्रित कृषि प्रसार की रणनीतिक दिशा

भविष्य की प्रसार प्रणाली को महिला किसानों की वास्तविक परिस्थितियों के अनुरूप विकसित करना होगा।

- सबसे पहले महिलाओं को स्वतंत्र कृषि हितधारक के रूप में पहचाना जाना चाहिए। कृषि योजनाओं में महिलाओं के लिए अलग से संपर्क, पंजीकरण और सलाह की व्यवस्था उपयोगी होगी।
- दूसरे, महिलाओं के लिए आवश्यकता-आधारित प्रशिक्षण विकसित किया जाना चाहिए। प्रशिक्षण का विषय स्थानीय कृषि प्रणाली और महिलाओं की वास्तविक जिम्मेदारियों से जुड़ा होना चाहिए।
- तीसरे, स्वयं सहायता समूहों और महिला किसान समूहों को स्थानीय प्रसार साझेदार बनाया जा सकता है।
- चौथे, पुरुष और महिला दोनों प्रसार कर्मचारियों को लैंगिक-संवेदनशील संचार का प्रशिक्षण देना आवश्यक है।
- पाँचवें, डिजिटल प्रसार को आमने-सामने की सलाह का पूरक बनाया जाना चाहिए। छठे, प्रशिक्षण को ऋण, इनपुट, बाजार और बीमा जैसी सेवाओं से जोड़ना चाहिए।
- सातवें, कार्यक्रमों के प्रभाव को बहुआयामी सशक्तिकरण संकेतक से मापना चाहिए। महिलाओं के निर्णय, संसाधनों पर नियंत्रण, समय, नेतृत्व, आय और सामूहिक भागीदारी में परिवर्तन को नियमित रूप से दर्ज करना चाहिए।

भविष्य के लिए अनुसंधान की प्राथमिकताएँ

भविष्य के शोध को केवल कृषि उत्पादन और तकनीक अपनाने तक सीमित न रखकर महिला सशक्तिकरण के व्यापक परिणामों का अध्ययन करना चाहिए। विशेष रूप से यह समझने की आवश्यकता है कि कौन-सी प्रसार पद्धति किन परिस्थितियों में महिलाओं के निर्णय, संसाधन नियंत्रण और आय पर सबसे अधिक प्रभाव डालती है। हाल के शोध में यह स्पष्ट हुआ है कि कृषि ज्ञान की पहुँच और प्रसार सेवाओं तक पहुँच में लैंगिक अंतर अभी भी महत्वपूर्ण है। कुछ अध्ययनों ने यह भी दिखाया है कि महिलाओं की घरेलू जिम्मेदारियाँ, तकनीक की उपलब्धता और संसाधनों पर अधिकार तकनीक अपनाने की प्रक्रिया को प्रभावित करते हैं। अतः भविष्य में निम्न क्षेत्रों पर अधिक शोध आवश्यक है: महिला-केंद्रित डिजिटल विस्तार, AI आधारित कृषि सलाह, महिला किसान उत्पादक संगठन, श्रम-बचत तकनीक, जलवायु-स्मार्ट कृषि, महिला प्रसार कार्यकर्ताओं के नेटवर्क, कृषि-आधारित उद्यमिता तथा सशक्तिकरण के दीर्घकालिक प्रभाव।

निष्कर्ष

महिला किसानों के सशक्तिकरण में कृषि प्रसार शिक्षा एक प्रभावी माध्यम के रूप में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। इसके माध्यम से महिलाओं को आधुनिक कृषि तकनीकों, उन्नत उत्पादन विधियों, कृषि संसाधनों, बाजार, जलवायु अनुकूलन तथा मूल्य संवर्धन से संबंधित उपयोगी जानकारी और व्यावहारिक कौशल प्राप्त होते हैं। इससे उनकी कृषि संबंधी निर्णय लेने की क्षमता, आत्मविश्वास और संस्थागत भागीदारी में सुधार हो सकता है। स्वयं सहायता समूह, महिला प्रसार कार्यकर्ता, सहभागी प्रशिक्षण, किसान क्षेत्र विद्यालय तथा डिजिटल माध्यम महिलाओं तक कृषि ज्ञान पहुँचाने में उपयोगी हो सकते हैं। हालाँकि, केवल जानकारी उपलब्ध कराना पर्याप्त नहीं है। भूमि, ऋण, इनपुट, समय, बाजार तथा निर्णय लेने के अवसरों तक महिलाओं की पहुँच सुनिश्चित करना भी आवश्यक है। इसलिए कृषि प्रसार व्यवस्था को अधिक महिला-केंद्रित, सहभागी, आवश्यकता-आधारित और संसाधन-संपृक्त बनाया जाना चाहिए। ऐसी समावेशी प्रसार शिक्षा न केवल महिला किसानों की तकनीकी दक्षता और आय बढ़ाने में सहायक होगी, बल्कि कृषि उत्पादकता, खाद्य एवं पोषण सुरक्षा तथा ग्रामीण महिलाओं की सामाजिक-आर्थिक स्थिति को मजबूत करने में भी महत्वपूर्ण योगदान दे सकती है।